REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

"पर्यटन स्थल आभानेरी के शिल्प में धर्मदर्शन"

डॉ. संगीता कु. नागरवाल[1] , डॉ. विजय कुमार[2]
[1]सहायक आचार्य , स्व. राजेश पायलट राज.
स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदीकुई.
[2]सहायक आचार्य , स्व. पण्डित नवल किशोर शर्मा राज.
स्नोतकोत्तर महाविद्यालय दौसा.

प्रस्तावना

शिल्प की स्वर्ण नगरी व इतिहास की आभा से अभिभूत करने वाला स्थान **आभानेरी** वर्तमान में विश्व पटल पर एक जाना माना नाम है। आभानेरी ने विश्व में राजस्थान को एक नई पहचान दिलाई।

आभानेरी गाँव अत्यन्त सजीव एवं कलात्मक मूर्ति शिल्प के रूप में अतीत की वैभवशाली एवं सांस्कृतिक धरोहर को संजोये हुऐ है। इस गाँव के शिल्प में भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के दर्शन होते है। यह स्थान प्रारम्भिक मध्यकाल के दो कलात्मक एवं दुर्लभ ऐतिहासिक स्मारकों हर्षत माता एवं चाँद बावड़ी के कारण प्रसिद्ध है।

यह स्थान दौसा जिले की बाँदीकुई तहसील में आता है। यह बाँदीकुई रेलवे स्टेशन से 10 किमी. (6 किमी. गुलर चौराहे तक एवं 4 किमी. गुलर चौराहे से आभानेरी तक) दूरी तक स्थित है तथा राजकीय महाविद्यालय बाँदीकुई से पूर्व में 13 किमी. दूरी पर स्थित है। जयपुर आगरा सड़क मार्ग से एन.एच. 11 से 95 किमी. पूर्व की ओर स्थित है। दौसा जिला मुख्यालय से यह स्थान 40 किमी. की दूरी पर स्थित है।

निर्माता

साक्ष्यों के अभाव में आभानेरी के मन्दिर व बावड़ी के सम्बन्ध में एक से अधिक मत प्रस्तुत किये गये है। डॉ. जगदीश सिंह गहलोत के अनुसार यह राजा भोज (गुर्जर प्रतिहार) की अभयनगरी था। ऐतिहासिक साक्ष्यों व जनश्रुतियों के आधार पर दूसरी मान्यता यह है कि प्राचीन आभानेरी निकुम्भ चौहानों की राजधानी था। स्थानीय निवासियों के अनुसार यहाँ के प्रसिद्ध राजा चाँद ने यह गाँव बसाया था। मोती लाल भार्गव ने भी आभानेरी का राजा चाँद को बताया है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अनुसार भी आभानेरी का निर्माण चौहान वंशीय राजा चाँद द्वारा 8वीं–9वीं शताब्दी में करवाया गया था। जो तत्कालीन आभानगरी का शासक था।

आभानेरी में धर्म दर्शन

आभानेरी के दोनों ऐतिहासिक स्मारक हर्षत माता मन्दिर एवं चाँद बावड़ी के शिल्प में विभिन्न धर्मों के देवी देवताओं के दर्शन होते है।

हर्षत माता

यह मन्दिर महामेरू शैली का पूर्वाभिमुखी, दोहरी जगती पर स्थित है। मंदिर योजना में पंचरथ, गर्भग्रह, प्रदक्षिणा पथ युक्त है। जिसके अग्रभाग में स्तम्भों पर आधारित मण्डप है। गर्भग्रह एवं मण्डप गुम्बदाकार छतयुक्त है। जिसकी बाहरी दीवार पर भद्र–ताखो (आले) में हिन्दु देवी देवताओं की प्रतिमायें उत्कीर्ण है। ऊपर जगती के चारों और तारवों में रखी सुन्दर मूर्तियाँ जीवन के धार्मिक एवं लौकिक दृश्यों को दर्शाती है। जो कि इस मन्दिर की मुख्य विशेषता है। मन्दिर के गर्भ ग्रह में लक्ष्मी देवी की चतुर्भुज मूर्ति स्थापित है जिसे हर सिद्धि माता के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर पट्टिका पर जय हरसिद्धि माता दी अंकित है।

मंदिर के उत्तरपूर्व में हरगौरी अपने वाहन नंदी के साथ स्थानक (खड़ी) मुद्रा में है ;।च्छ 22ध्05द्ध उत्तर दिशा में ही दो नागों के साथ–बलराम (17/05) पश्चिम में प्रद्युम्न (12/05) दक्षिण में अनिरूद्ध (07/05) (सभी विष्णु के अवतार) दक्षिण में ही शिव गण प्रेतो के साथ (07/05) अग्नि (04/05) भी है। पूर्व दिशा की ओर योग नारायण (02/05) प्रवेश द्वारा के पूर्व में ही इन्द्रगज के साथ (01/05) मंदिर के मण्डप पर नृतक वैष्णवी (25/05) नंदी के साथ शिव (74/05) विष्णु अवतार नृसिंह हिरणयकश्यप का वध करते हुऐ (26/05) तांड़व शिव 31/05 इसके बायी और पुरूष देवता, बलराम, सूर्य (33/05) स्थानक (खड़ी) मुद्रा में है। पुरूष देवता नृत्य मुद्रा में (34/05) शिव लिंग (35/05) जिसे दो पुजारियों द्वारा पूजा करते हुए दिखाया गया है। अनुरूद्ध (45/05) त्रिविक्रम मण्डप के स्तम्भ पर (विष्णु का बड़ा आकार), कालिया का मर्दन करते हुऐ कृष्ण को दिखाया गया है दो नाग आकृतियाँ को हाथ जोड़े हुऐ दिखाया गया है (48/05) कृष्ण लीला पैनल जिसमें मवेशी पेड़ के नीचे दिखाऐ गये है (55/05) कुबेर अपनी पत्नी के साथ (47/05) द्वितीय जगती पर खण्डित नृसिंह अवतार की मूर्ति, हनुमान जी, अग्नि, पवन, ब्राह्मणी गणेश जी के साथ है। साथ ही मन्दिर की प्रथम प्रगति व धरातल पर मन्दिर को खण्ड़त शिल्प अवशेष यत्र–तत्र बिखरे हुये है जिनके मन्दिर के शिखर का आभलक भी विद्यमान है।

चाँद बावड़ी

मन्दिर के दक्षिण पूर्व में स्थित चाँद बावड़ी नाम से एक बावड़ी हैं भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अुनसार इसका निर्माता भी चौहान शासक निकुम्भ चाँद ही था। स्थानीय लोग बताते है कि इस बावड़ी का निर्माता कोई स्थानीय शिल्पी था। यह हो सकता है कि प्रारम्भ में बावड़ी का निर्माण स्थानीय शिल्पी ने करवाया हो बाद में मन्दिर के निर्माण के समय बावड़ी के कुछ हिस्सों का निर्माण किसी शासक के द्वारा करवाया गया हो बावड़ी के बरामदें में नृतक शिव (ASI 22) अन्धकासुर वधमूर्ति (ASI 13) उमा माहेश्वर (शिव पार्वती½ (ASI 06/05) अर्द्ध नारीश्वर, नृतक गणेश, ब्राह्मणी (07/05) के साथ गणेश, मोदक गणेश, गणेश (ABN 7/140) गणेश रिद्धि सिद्धि के साथ, कार्तिक्य (तीन मूर्तिया) विष्णु, (ASI/32) योग नारायण विष्णु (ASI/91) लक्ष्मीनारायण, बलराम (ASI/50) गर्वधनधारी कृष्ण (ASI/21) संयुक्त मूर्ति हरिहर (ASI/06)] हर हर नाारायण गर्भ (शिव नारायण) (ASI/154) सूर्य (ASI/26) सूर्य सात घोड़ों पर (ASI/27) रेवन्त (ASI/92), पार्वती (ASI/23, 142, 234) कपालधारणी देवी, सप्तमातृका (सात देवी का पैनल ASI/79) महिषासुरमदर्नी (भैंसें का मरते हुऐ ASI 18. 170, 223) दुर्गा, चामुण्डा (ASI 82) गजलक्ष्मी, यम कुबेर, ईशान (द्वारपाल) जैन धर्म के पार्श्वनाथ (ASI/54) सूर्यनारायण (ASI/83) की मूर्ति के अतिरिक्त विभिन्न पशुओं की आकृति में नाले, यक्ष, गन्धर्व, अप्सरा इत्यादि का मूर्तिशिल्प यहाँ देखने को मिलता है इस शिल्प को देखकर इतिहासकारों का यह तर्क सत्य प्रतित होता है कि इस मन्दिर के शिल्प में भारतीय धर्म के 33 करोड़ देवी–देवताओं को बखुबी से स्थापित किया गया था और विस्तृत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज में हिन्दु धर्म व्यापक रूप में प्रचलित था एवं सभी सम्प्रदाय वैष्णव, शिव शाक्त (शक्ति) व्यापक रूप से प्रसारित थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न सूर्य, नाग पूजा भी प्रचलित थी। प्राप्त शिव लिंग से स्पष्ट होता है कि लिंग पूजा भी प्रचलन में भी। इसके अतिरिक्त मन्दिर व चाँदबावड़ी से प्राप्त संयुक्त मूर्तियों (हरिहर, सूर्यनारायण, अर्द्धनारेश्वर जैन मूर्तिया) से स्पष्ट होता है कि उस समय धार्मिक सम्भाव व सौहार्द की भावना राजस्थान में विद्यमान की।

धार्मिक सम्भाव के प्रतिफल स्वरूप ही ब्रह्मा–विष्णु–महेश को सामने धरातल पर कल्पित किया गया है उनमें कोई छोटा या बड़ा नहीं है। मध्यकालीन मूर्ति कला के इस तत्व को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करने की शक्ति एवं समता का कोई सानी नहीं है। आभानेरी के इस शिल्प से तत्कालीन सभ्यता व संस्कृति की झांकी आसानी से देखी जा सकती है तत्कालीन समय का सामाजिक जीवन स्त्रियों की स्थिति, खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा, आभूषण, दैनिक जीवन में उपयोग में आने वाली वस्तुऐं, सामाजिक समारोह, आर्थिक जीवन यथा पशुपालन, कृषि, धार्मिक जीवन विभिन्न सम्प्रदाय, विभिन्न देवी देवता, वृक्ष पूजा प्रतिक पूजा, पशु पूजा इत्यादि के दर्शन आसानी से किये जा सकते हैं।

लेकिन आक्रान्ताओं ने भारतीय संस्कृति की इस धरोहर को धराशाही कर दिया। कभी समृद्धशाली रहा यह क्षेत्र आज सिर्फ खण्डहर के रूप में अपनी अस्मिता को बचाये खड़ा है। यहाँ का लगभग सम्पूर्ण शिल्प खण्डित है।

लेकिन फिर भी यहां शोधार्थियों व इतिहासकारों के अध्ययन हेतु अपार संभावनाऐं है। इस स्थान के महत्व को देखते हुये भारत सरकार ने इसे संरक्षित स्मारक घोषित कर दिया है। यहां प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक आते है और यहां के शिल्प में समाहित संस्कृति को अपने कैमरे में कैद कर अपने देश में उसको प्रचारित–प्रसारित करते है। इसी के कारण आज इस क्षेत्र में विश्व के मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान बना दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. प्रत्यक्ष सर्वे
2. आर्कयोलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट
3. मोहनलाल गुप्ता–जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासकि अध्ययन
4. डॉ. जगदीश सिंह गहलोत–कछवाहों का इतिहास
5. डॉ. राघवेन्द्र मनोहर – राजस्थान के प्रमुख शक्ति पीठ
6. कोमलकान्त शर्मा – मत्स्य जनपद क्षेत्र की कला एवं पुरातत्व
7. निलिमा वशिष्ठ – राजस्थान की मूर्तिकला
8. अग्रवाल वासुदेव शरण–भारतीय कला
9. पुपूल जयकर–निडिवल स्कल्पचर आभानेरी
10. राजेन्द्र यादव–स्कल्पचर आर्ट ऑफ पैराडीगम
11. अग्रवाल आर.सी. स्कल्पचर्स फ्राम आभानेरी राजस्थान

डॉ. संगीता कु. नागरवाल
सहायक आचार्य , स्व. राजेश पायलट राज. स्नातकोत्तर महाविद्यालय बाँदीकुई.

डॉ. विजय कुमार
सहायक आचार्य , स्व. पण्डित नवल किशोर शर्मा राज. स्नोतकोत्तर महाविद्यालय दौसा.

LBP PUBLICATION